इकाई 5 पर्यावरण एवं प्रकृति

पेड़ों, नदियों, हवाओं, बादलों एवं पहाड़ों का मानव से सहज रिश्ता है और यह रिश्ता कायम रखना मानव के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, परंतु विकास की दौड़ में हम इतने आत्मकेंद्रित हो गए हैं कि अपनी जरूरत की सारी चीज़ों को सहेज लेने की चाह में पर्यावरण के प्रति पूरी तरह लापरवाह होते जा रहे हैं। आधुनिक समाज का प्रकृति से जुड़ाव कम होता जा रहा है और जिन समाजों में यह अभी भी बरकरार है, जैसे वन–प्रांतर में निवासरत आदिवासी समुदाय, वहाँ भी आधुनिक बनाने या बनने की अंधी दौड़ में प्रकृति से दुराव अवश्यंभावी है। सभ्यता, समाज और प्रकृति का रिश्ता परस्पर विरोधाभासी बनता दिखाई देता है। प्रकृति, समृद्ध समाज और विकास जैसी अवधारणाओं पर प्रश्न उठाने और नए सिरे से सोचने की जरुरत है। इस इकाई में संकलित रचनाएँ आपको पर्यावरण एवं प्रकृति के अवलोकन का अवसर देती हैं साथ ही संस्कृति व परिवेश के विविध आयामों पर गर्व करने की प्रेरणा देती है एवं उनके प्रति संवेदनशीलता का अहसास कराती हैं। इतना ही नहीं अपनी आने वाली पीढ़ियों को हम विरासत में क्या देना चाहते हैं, इसके प्रति एक बार पुनः सोचने के लिए प्रेरित करती है।

डॉ. मुकुटधर पांडेय ने **ग्राम्य जीवन** कविता में गाँव के नैसर्गिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण किया है। इसमें बताया गया है कि सभी तरह की समृद्धियों से पूर्ण होते हुए भी ग्रामवासी सहज जीवन जीते हैं, उनकी इस सहजता को उनकी अज्ञानता और भोलापन समझने की भूल करना उचित नहीं है।

मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग एक रोचक यात्रा वृत्तांत है। चित्रात्मक शैली में लिखा गया यह यात्रावृत्त हमें अनेक छोटे–छोटे अनुभवों के जरिये एक ऐसे गांव का साक्षात्कार कराता है जिसे कि भारतवर्ष का सबसे स्वच्छ गांव घोषित किया गया है। अपने प्राकृतिक परिवेश से परिचित कराने के साथ यहां के निवासियों की साफ–सुथरी जीवन शैली से पाठकों को आकर्षित करना है।

बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता में निर्मला पुतुल ने आधुनिक सभ्यता एवं विकासशीलता के दौर में धरती के बदलते स्वरूप एवं लगातार हो रहे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की समस्या को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। प्रकृति के दर्द को रेखांकित करती इस कविता में मानव के संवेदनहीन होने पर कटाक्ष किया गया है।